प्रश्न-पत्र के लिए निर्दिष्ट अनुभेद
कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रश्नक्रम अनुदेश की ध्यानपूर्वक पढ़ें:
सभी प्रश्नों के उत्तर लिखना अनिवार्य है।
प्रथम प्रश्न के अंक उसके समान अंकित हैं।
उत्तर हिंदी में ही लिखें जाएंगे, यदि किसी प्रश्न-विवेचन में अन्य विरोध न हो।
दिन प्रश्नों के संबंध में अधिकतम शब्द-संख्या निर्दिष्ट हैं, यदि इसका अनुसार लिखा जाना चाहिए। यदि किसी प्रश्न का उत्तर,
निर्दिष्ट शब्द-संख्या की तुलना में कम लिखा या छोटा हो, तो अंकों की कटौती की जा सकती है।
प्रशंसक-उत्तर पुस्तिका का कोई भी पृष्ठ अथवा पृष्ठ का भाग, जो पहले ही छोड़ दिया जाए, उसे स्पष्ट रूप से काट दिया जाना चाहिए।

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

All questions are to be attempted.

The number of marks carried by a question is indicated against it.

Answers must be written in HINDI unless otherwise directed in the question.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to and if answered in much longer or shorter than the prescribed length, marks may be deducted.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.
Q1. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 600 शब्दों में निबंध लिखिए:
(a) भारत में स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति
(b) भारतीय कृषि कानून, 2020 की सार्वजनिकता
(c) राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 की चुनौतियाँ
(d) वर्तमान समय में कृत्रिम बुद्धि (AI) की उपयोगिता

Q2. निम्नलिखित गद्यांश को स्थानांतरिक पढ़ें और उसके आधार पर नीचे लिखें।

जीवन और पर्यावरण एक-दूसरे से संबंधित हैं। समस्त जीवितांगियों का जीवन उनके पर्यावरण की ही उपज होता है। अतः हमें जलवायु की रचना, शक्ति, साम्राज्य और विशेषताओं उस संपूर्ण पर्यावरण से ही निर्भर होती है, उसी में भी पन्तपत्ती हैं और विकास पाती हैं। बत्ततः जीवन और पर्यावरण एक-दूसरे में इतने जुड़े हुए हैं कि दोनों का सह-अस्तित्व बहुत आवश्यक है।

पर्यावरण हमारा रक्षा कवच है जो प्रकृति से हमें बिना लिता है। यह हम सब का पालनहरू और जीवनार्थ है। पर्यावरण मूलतः प्रकृति की देन है। यह भूमि, चार-पर्यावरण, नद-निर्वाण, मरुस्थल, मैदान, स्रोत के जंगल, रोगियों शाक पशुच, स्वच्छ जल से भरी लहलहाती जीवों और तत्वों से भरा है। इस पर बहुती शीतल, मंड सुंदर भाग तथा उमड़ते और अपूर्वतार बदलते बदलते — वे सभी घटती पर बसने वाले मनुष्यों के विकास और सुख-मस्तिष्क के लिए एक संतुलित पर्यावरण का निर्माण करते हैं। किंतु पर्यावरण का वह प्राकृतिक संतुलन बड़ी तेजी से बिगड़ता जा रहा है। आवश्यकता होता है कि मनुष्य धरती के इन स्रोतों का किस्मत अंधाधुंध दोहन करता जा रहा है, यह इसके वर्णों का इस प्रकार अविभाज्त धुंधधुंध कर रहा है कि सता प्रकृति-संपत्ति ग़लबग़ल गया है। अब वह दिन दूर नहीं लगाता जब धरती पर हजारों घटनाओं पुराना हिम-युग लौट आए अथवा ध्रुवों पर गरी बर्फ की मोटी पत्त मिट्टि जाने से समुद्र की प्रकृति की प्रतिकृति पाने के लिए और जीव-जंतुओं को निगल जाएं।
निर्धार ही पर्यावरण को दिखाई और दृष्टि करने वाली समस्त चिप्साएँ हमारी अपनी ही लाई हुई हैं। हम स्वयं प्रकृति का संगठन विगाह रहे हैं। इसी संगठन से भूमि, ढाल, जल और ध्वनि के प्रदूषण उत्क्रांत होते हैं। पर्यावरण-प्रदूषण से कई के रोग, हृदय और पेट की बीमारियाँ, दृष्टि और श्रवण शिकार हैं, मानविकी संबंध और अन्य संबंधित रोग पैदा हो रहे हैं। हम सभी जानते हैं कि धरती पर प्रकृति प्रसंस्करण में ही संबंध हो सकता है। धरती के वनस्पतियों से तकनीकी जानकारी, इसलिए धार खाने वाले पशुएं पर्यावरण संदर्भ में थे। इस प्रकार खाने वाले जीवन की संरचना संगठन से संबंधित सशक्त रहने के लिए ही संरक्षित किये जाते हैं। इन तीनों का अनुपात संबंधित कर की तात्त्विकता और नियंत्रण था। आधुनिक सुपरीमा वैज्ञानिक रूप से उद्योग-चंद्रों के विकास-कैर्य के साथ-साथ जनसंचय का भी ग्राहक बिन्दु है।

(a) इस कथन का उचित स्पष्ट कीजिए कि “जीवन और पर्यावरण एक-दूसरे से संबंध हैं”।
(b) पर्यावरण और प्रकृति का क्या संबंध माना गया है?
(c) प्रकृति संगठित पर्यावरण का निर्माण कैसे करती है?
(d) पर्यावरण-संस्करण के कारण क्या संकट होते हैं?
(e) पर्यावरण-प्रदूषण से कौन-कौन सी बीमारियाँ पैदा हो गई हैं?

Q3. निम्नलिखित अनुच्छेद का सारांश लघुभाषा एक-एक इंतजार रचना में लिखिए। इसका शीर्षक लिखने की आवश्यकता नहीं है। सारांश अपने शब्दों में ही लिखिए:

भारत की एकता और स्वतंत्रता एक ही नस्ल के दो पहलु हैं। आज हमारी एकता हास से निकलती है तो स्वतंत्रता भी थपेट बिलाशक बाहर निकल जाएगी। इसलिए समस्त भारतवासियों का पहला कर्तव्य वह है कि पूरी निश्चितता से अपनी राष्ट्रीय एकता की रक्षा करें। देश अपनी समस्त भारतीय समस्ताएं से भी बड़ा और मिल्ले है। एकता की रक्षा के लिए हमें आपका तहत पड़े तो हमें उसे भी नहीं लेना चाहिए। एकता की रक्षा के लिए यदि हम अन्ययोग सहना पड़े तो हम अन्ययोग को भी सहने चाहिए। वह सब इसलिए सहानुभुम है कि भारत की एकता जब पूर्ण और बलवती हो जाएगी, तब कोई भी हमारा अपमान नहीं कर पाएगा। वह देश का एक भाग किसी दूसरे भाग के साथ अन्ययोग करना भी बूढ़ा जाएगा। आज हमारी आर्थिक स्थिति मजबूत है तो हमें इसके भी खुदम होंगे। यदि वे रहते भी हैं तो उनमें पहले जैसी कठोरता नहीं रह जाएगी क्योंकि समृद्धि व्यक्ति की सोच का प्रभावित करती है।
एकता की रक्षा के साथ-साथ हमारा दूसरा कर्त्तव्य यह है कि हम भारत के उस रूप को सुधारने की कोशिश करें जिसे साकर करने के लिए वह स्वाधीन हुआ है। भारत की आजादी के प्राप्त हुए 73 वर्ष हो चुके हैं लेकिन अभी हमें और भी नई संज्ञा लगानी है। स्वाधीनता केवल रोटी का पराम नहीं है। स्वाधीनता केवल कारकितान की स्थापना करने की योजना नहीं है। स्वाधीनता का नारा साधन अर्थ आत्मा की वह स्वतंत्रता, गानस की वह मुक्ति है, जिसके कारण राष्ट्र अपने व्यक्तित्व को पूर्ण रूप से अभिलक्ष करता है। वह ज्ञान प्रकृति भूखा है जो उसके सामने दर्शन पर भाषण देना ज्ञात है।

भारत कोई नया देश नहीं है। जिस भाषा में उसकी संस्कृति का विकास हुआ, वह संसार की सभी प्राचीन भाषा है; जो प्रायः भारतीय सभ्यता का आदि प्रान्त समझा जाता है। वहीं संपूर्ण नानात्मकता का भी प्राचीनतम प्रांग है। जिनके विरोध में आरोपण के बाद भी भारत अपनी संस्कृति से पूरी गाड़ी के लिए तैयार नहीं हुआ। नवीन आंदोलन का तशा वैज्ञानिक सम्प्रदाय भी भारत से उसके अर्थ के रूप में खून सकता। सति केवल वही नहीं है जो रेखा टकराती नदी समने हमारे सामने फैली गयी है और वह स्थान का भी बहुत-सा अंग सत्य है परिकर निकालने द्वारा सभी में हुआ है। भारत को न केवल का नवीन सत्ता चाहिए जो भौतिक समृद्धि को संभव बनाता है, परन्तु प्राचीनकाल का वह सत्ता भी चाहिए जो भौतिक समृद्धि के लिए आत्मा के हनन को पाप समझता है।

जब से विज्ञान का उदय हुआ संसार के अभिकांश देशों में आज अर्थीत परशित और वर्तमान विकसी हुआ है। केवल भारत ही ऐसा देश है जहाँ अर्थीत आज भी युद्ध कर रहा है। यह संग्राम भारत में लंबे समय से चल रहा है। लेकिन भारत का अर्थीत आज भी न तो दुर्भिक्ष न अप्रगाधिक। भारत का अर्थीत हमेशा वर्तमान को साथ लेकर भविष्य की ओर चढ़ने का आदर रहा है। आज भी वह अपने पथ पर आग्रह है। रामकृष्ण और विवेकानंद, तिलक और अरविंद वे सभी महामुख अर्थीत के पश्चात थे। वे वर्तमान को समृद्ध कर भविष्य की ओर चढ़ने की शिक्षा दे रहे हैं। महात्मा गांधी सभी सहले अर्थीत की आवाज थे। आचार्य विनोबा भावे भी अर्थीत के चरम वर्तमान और भविष्य को देख रहे थे। स्वीडन और देशों नवीन होते हुए भी प्राचीनकाल के सबसे बड़े समर्थक थे। आज भी हमारे अर्थीत को छोड़ा नहीं है। अर्थीत हमारी सबसे बड़ी धरोहर है।

(504 शब्द)
निम्नलिखित गद्यांश का अंग्रेज़ी में अनुवाद कीजिए:

यह जीवन का सत्य है कि यदि चहले आप सचेत होकर न चले तो आफ़का पैर कोट्ठा था गांठ में जा सकता है। यद्दह दिल्ली विज्ञान के बढ़ते चरणों के साथ भी भीरवार्थ होता है। यदि हम उसका प्रयोग मानव कल्याण के लिए करते हैं तो विज्ञान शरीर बन जाता है। उसकी उपयोगता को कोई नकार नहीं सकता। किंतु यदि हम उसका उपयोग विद्वानों के कारण के लिए होता है तो विज्ञान का कारण बन जाता है और अभिशाप सिद्ध होता है। इस विद्वानों के कारण ही विज्ञान रोप के जरूरी है जो भौतिक सुख-सुविधाएं मिलने हैं वे हमें मानसिक सुख व शांति प्रदान करते में समर्थ सिद्ध हो रहे हैं। भौतिक प्रगति के लाभ मानव-जीवन आर्थिक व्यस्त, व्यावसायिक और भौतिकतावधारी होती गयी हैं। फलतः विज्ञान और उसकी उपस्थितियों ने मानव की आन्तरिक सुख-शांति से बंधक कर दिया है। नेतृत्व मूल्यों और मानवीय संबंधों का हाद तुला है। किंतु इसमें दोष मानव का ही है जिससे इसके दुश्मनों से स्वयं की भीषण संकट में डाल दिया। बड़ा-बड़ा संहारक अस्त्र इसी के प्रभाव है।

यदि मुद्दा अपने व्यक्तिगत स्वास्थ्य की छोड़कर जनता के विचार से विज्ञान के बढ़ते चरणों का उपयोग करने तो निःसंदेह ये चरण मानव प्रगति के लिए भारत में सिद्ध होगे।

Q5. निम्नलिखित गद्यांश का हिंदी में अनुवाद कीजिए:

One of India's greatest musicians was M.S. Subbulakshmi, affectionately known to most people as 'MS'. Her singing brought joy to millions of people not only in all parts of our country, but in other countries around the world as well. In October 1966, MS was invited to sing in the great hall of the General Assembly of the United Nations in New York, while representatives of all the member countries listened. This was one of the
greatest honours ever given to any musician. For several hours MS kept that international audience spellbound with the beauty of her voice and her style of singing; when the concert was over, the entire audience stood up and clapped as a sign of their appreciation of not only the singer but of the great music that she had carried with her from an ancient land. India could not have had a better ambassador. MS was the first musician ever to be awarded the ‘Bharat Ratna’, India’s highest civilian honour. She was the first Indian musician to receive the Ramon Magsaysay Award in 1974 with the citation reading “exact purists acknowledge Shrimati M.S. Subbulakshmi as the leading exponent of classical and semi-classical songs in the Carnatic tradition of South India”.

Q6. (a) निम्नलिखित मुहर्दों का अर्थ स्पष्ट करते हुए उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए: 2×5=10
   (i) अग्नि दिखाना 2
   (ii) ओँकार में धुल ड़ेकना 2
   (iii) ईट का नीला पत्थर से देना 2
   (iv) दृश्य खड़े करना 2
   (v) मानझ बेतना 2

(b) निम्नलिखित वाक्यों के शुद्ध रूप लिखिए: 2×5=10
   (i) आप अपना काम करो। 2
   (ii) मेरे भाई आख्यायक है। 2
   (iii) माफ़ आप चाहें तो मैं यह कलम आप को दे सकता था। 2
   (iv) दो खाल में दूध लाओ। 2
   (v) आकाश में बादल मंडला रही है। 2
(c) निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची लिखिए:

(i) पानी
(ii) कमल
(iii) पत्नी
(iv) बच्चा
(v) पैर

(d) निम्नलिखित शब्दों को इप तरह से वाक्य में प्रयुक्त कीजिए कि उनका अर्थ एवं अंतर स्पष्ट हो जाए:

(i) अवलंब – अविलंब
(ii) सबल – संबल
(iii) जलद – जलज
(iv) मार्ग – मात्र
(v) गृह – ग्रह